1206 से 1290 ई तक दिल्ली सल्तनत गुलाम वंश के सुल्तानों के नाम से विख्यात हुए, जिसका संस्थापक कुतुबद्दीन ऐबक था| वे एक वंश के नहीं थे, वे सभी तुर्क थे तथा उनके वंश पृथक-पृथक थे| अत: इन सुल्तानों को गुलाम वंश के सुल्तान कहने के स्थान पर प्रारंभिक तुर्क सुल्तान या दिल्ली के ममलूक सुल्तान कहना अधिक उपयुक्त हैं। इस लेख के माध्यम से आप गुलाम वंश pdf Download कर सकते हैं|

भारत में गुलाम वंश का प्रथम शासक कुतुबद्दीन ऐबक (1206) था| वह ऐबक नामक तुर्क जनजाति का था| बचपन में उसे निशापुर के काजी फरुखद्दिन अब्दुल अजीज कूफ़ी ने एक दास के रूप में ख़रीदा था| बचपन से ही अति सुरीले स्वर में कुरान पढ़ता था, जिस कारण वह कुरान- ख्वां (कुरान का पाठ करने वाला) के नाम से प्रसिद्ध हो गया| बाद में वह निशापुर से गजनी लाया गया, जहां उसे गोरी ने खरीद लिया| अपनी प्रतिभा, लगन और ईमानदारी के बल पर शीघ्र ही ऐबक ने गोरी का विश्वास प्राप्त कर लिया| गोरी ने उसे अमीर-ए-आखूर के पद पर प्रोन्नत कर दिया| उसने अपना राज्याभिषेक गोरी के मृत्यु के तीन माह पश्चात् जून, 1206 ई में कराया था|

ऐबक की राजधानी

ऐबक की राजधानी लाहौर थी| ऐबक ने कभी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की| उसने केवल मलिक और सुपहसलर की पदवियों से ही अपने को संतुष्ट रखा| गोरी के उत्तराधिकारी गियासुद्दीन महमूद से मुक्ति-पत्र प्राप्त करने के बाद 1208 ई में ऐबक को दासता से मुक्ति मिली|

इसे भी पढ़ें

तुर्कों का आक्रमण Pdf(Attack of Turks UPSC)

अपनी उदारता के कारण कुतुबद्दीन ऐबक इतना अधिक दान करता था कि उसे लाख बख्श (लाखों को देने वाला) के नाम से पुकारा गया| ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम और अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिदों का निर्माण कराया था| उसने दिल्ली में स्थित कुतुबनीमार का निर्माण कार्य प्रारंभ किया, जिसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया| फ़िरोज़शाह तुगलक के शासनकाल में

इसकी चौथी मंजिल को काफी हानि पहुंची थी, जिस पर फ़िरोज़ ने चौथी मंज़िल के स्थान पर दो और मंजिलों का भी निर्माण करवाया| कुतुबद्दीन ऐबक कि मृत्यु चौगान के खेल (आधुनिक पोलो कि भांति का एक खेल) में घोड़े से गिरने के दौरान 1210 ई में हुई थी| उसे लाहौर में दफनाया गया|

दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान इल्तुतमिश था| उसने सुल्तान के पद की स्वीकृति खलीफा से प्राप्त की| खलीफा ने इल्तुतमिश के शासक की पुष्टि उस सारे क्षेत्र में कर दी, जो उसने विजिट किया और उसे सुल्तान-ए-आजम की उपाधि प्रदान की|

इल्तुतमिश इल्बरी जनजाति का तुर्क था| सुल्तान बनने से पहले वह बदायूं का सूबेदार था| 1205-1206 ई में खोक्खर जाति के विद्रोह को दबाने के लिए किए गए अभियान में वह मुहम्मद गोरी और ऐबक के साथ था| युद्ध में उसने साहस और कौशल का परिचय दिया, जिससे प्रभावित होकर गोरी ने ऐबक को दासता से मुक्त करने का आदेश दिया|

चंगेज खां

मंगोल नेता चंगेज खां भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर इल्तुतमिश के शासनकाल में आया था| चंगेज खां के प्रकोप से रक्षार्थ ख्वारिज्म शाह का पुत्र जलालुद्दीन मंगबरानी सिंधु घाटी पंहुचा| चंगेज खां ने इल्तुतमिश के पास अपने दूत भेजे थे की वह मंगबरानी की सहायता न करे, इल्तुतमिश ने उसकी कोई सहायता न की और जब मंगबरानी 1224 ई में भारत से चला गया, तो इस समस्या का समाधान हो गया|

इल्तुतमिश ने बिहार शरीफ एवं बाढ़ पर अधिकार पर अधिकार कर राजमहल की पहाड़ियों में तेलियागढ़ी के समीप हिसामुद्दीन ऐवज को पराजित किया| ऐवज ने इल्तुतमिश की अधीनता स्वीकार कर ली| इल्तुतमिश ने ऐवज के स्थान पर मलिक-जानी को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया|

सिक्को का प्रचलन

इल्तुतमिश ने ही भारत में सल्तनत काल में सर्वप्रथम शुद्ध अरबी सिक्के चलाए थे| सल्तनत युग के दो महत्वपूर्ण सिक्के चांदी का टंका (175 ग्रेन) और तांबे का जीतल उसी ने आरंभ किए तथा सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाने की परंपरा शुरू की| 1229 ई में इल्तुतमिश को बगदाद के खलीफा से खिलअत का प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ, जिससे इल्तुतमिश वैध सुल्तान और दिल्ली सल्तनत स्वतंत्र राज्य बन गया|

गुलाम वंश से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य
मध्यकालीन भारत की प्रथम महिला शासिका रजिया सुल्तान (1236-40) थी|
सुल्तान बलबन का पूरा नाम गयासुद्दीन बलबन था|
बलबन ने 1266-1286 ई तक सुल्तान के रूप में सल्तनत की बागडोर संभाली|
बलबन ने रक्त और लौह की निति अपनाई थी|
गुलाम वंश Pdf Download

यदि आप गुलाम वंश Pdf Download करना चाहते हैं, तथा परीक्षा से जुड़ी सभी जानकारियां प्राप्त करना चाहते हैं। तो आप हमारे द्वारा नीचे दिए गए लिंक के जरिए डाउनलोड कर सकते हैं।

गुलाम वंश Pdf Download

गुलाम वंश mcq

Q.1 गुलाम वंश का संस्थापक कौन था?

A) अलाउद्दीन खिलजी B) कुतुबद्दीन ऐबक

C) बलबन D) इल्तुतमिश

Ans. B

Q.2 गुलाम वंश का प्रथम शासक कौन था?

A) इल्तुतमिश B) बलबन

C) रजिया D) कुतुबद्दीन ऐबक

Ans. D

Q.3 ढाई दिन का झोपड़ा क्या हैं?

A) मस्जिद B) मंदिर

C) संत की झोपड़ी D) मीनार

Ans. A

Q.4 निम्न में से कौन-सी इल्तुतमिश के राज्यकाल में सल्तनत की राजधानी थी?

A) आगरा B) लाहौर

C) बदायूं D) दिल्ली

Ans. D

Q.5 दिल्ली का प्रथम मुस्लिम शासक कौन था?

A) कुतुबद्दीन ऐबक B) इल्तुतमिश

C) रजिया D) बलबन

Ans. B

Also Read

Nayrahealthcare tips

Bihar Police SI Syllabus 2023 Pdf Download[जानें बिहार पुलिस SI सिलेबस & लेटेस्ट पैटर्न]